❀ श्रीहरिः ❀

श्रीराम नाम की मानस की चौपाई

परमहंस

श्रीस्वामी राममङ्गलदासजी महाराज

गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड अयोध्या

द्वारा

संग्रहीत

प्रकाशकः—

बिशुन सिंह एडवोकेट

लखनऊ ।

प्रकाशक :
बिशुन सिंह एडवोकेट
लखनऊ

हरि व्यापक सर्वत्र समाना ।
प्रेम ते प्रगट होंइ मैं जाना ॥

रनी ॥
हाई ॥

मुद्रकः—
साकेत प्रेस, फैजाबाद ।

नम्र-निवेदन

परमहंस राम मंगल दास

श्री स्वामी जी ने वतमान संकलन द्वारा श्री रामचरित मानस-मंथन करके उसका सारभूत अमृत प्रस्तुत किया है, जो राम भक्तों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। इसकी प्रत्येक चौपाई राम से आरम्भ होती है; दोहा अथवा रोला, इसकी पूर्व पंक्ति में राम नहीं है दूसरी पक्ति में है। इस प्रकार पाठक पाठ के साथ-साथ नाम स्मरण के पुण्य का भी भागी हो जाता है।

प्रत्येक काण्ड की पंक्तियाँ इस क्रम से रक्खी गई हैं कि भक्त को राम का दार्शनिक रूप, उनके मर्यादा पुरुषोत्तमत्व, कर्तव्य निष्ठा, भक्त वत्सलता आदि गुण बड़ी ही सरलता से स्पष्ट हो जाते हैं। कथा केवल सांकेतिक रूप से चलती है, परन्तु समस्त मार्मिक स्थलों को अपने में छिपाये हुये हैं।

मुझे आशा है कि ऐसे गुण युक्त, मोक्ष-प्रदाता ग्रन्थ को प्रत्येक भक्त अपनी पूजा की सामग्री रक्खेगा तथा अपनी अटूट श्रद्धा के द्वारा भविष्य में स्वामी जी को ऐसे ही अन्य ग्रन्थ रत्न हिन्दी संसार को देने के लिए विवश करेगा।

श्री राम जय राम जय जय राम ॥

घसियारी मण्डी,
लखनऊ।

विशुन सिंह,
एडवोकेट।

बाल काण्ड

चौ०-राम भक्ति जँह सुरसरि धारा। सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा॥
राम भगति भूषत जिय जानी। सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी॥
राम चरित सर बिनु अन्हवाये। सो श्रम जाहि न कोटि उपाये॥
राम सुकीरति भनिति भदेसा। असमंजस अस मोहिं अंदेसा॥
राम चरन पंकज मन जासू। लुबुध मधुप इव तजै न पासू॥

दोहा—बरषा रितु रघुपति भगति, तुलसी सालि सुदास।
राम नाम वर बरन युग, सावन भादों मास॥१॥
राम नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरहुँ, जौं चाहसि उजियार॥२॥

चौ०-राम भगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा॥
राम भगत हित नर तनु धारी। सहि सङ्कट किये साधु सुखारी॥
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी॥
राम सुकंठ विभीषन दोऊ। राखे सरन जान सब कोऊ॥
राम भालु कपि कटकु बटोरा। सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा॥
राम सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा॥

दोहा—ब्रह्म राम तें नाम बड़, बरदायक बरदानि।
राम चरित सत कोटि महुँ, लिय महेश जिय जानि॥३॥

चौ०-राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता॥

दोहा—राम नाम नर केसरी, कनक कसिपु कलि काल।
जापक जन प्रहलाद जिमि, पालिहिं दलि सुर साल॥४॥

चौ०-राम सुस्वामि कुसेवक मोसो। निज दिसि देखि दयानिधि पोसो॥

दोहा—राम निकाई रावरी, है सबहीं को नीक।
जो यह साँची है सदा, तौ नीको तुलसीक॥५॥

चौ०-राम कथा कलि पन्नग भरनी। पुनि विवेक पावक कहुं अरनी॥
राम कथा कलि कामद गाई। सुजन सजीवनि मूरि सुहाई॥
रामहिं प्रिय पावनि तुलसी सी। तुलसिदास हित हिय हुलसी सी॥

दोहा—राम कथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु।
तुलसी सुभग सनेह बन, सिय रघुबीर बिहारु ॥६॥

चौ०-राम चरित चिंतामनि चारू। संत सुमति तिय सुभग सिंगारू ॥

दोहा—राम चरित राकेस कर, सरिस सुखद सब काहु।
सज्जन कुमुद चकोर हित, हित बिसेषि बड़लाहु ॥७॥

चौ०-राम कथा की मिति जग नाहीं। अस प्रतीति तिन्ह के मन माहीं ॥

दोहा—राम अनन्त अनन्त गुन, अमित कथा विस्तार।
सुनि आचरज न मानिहहिं, जिनके विमल विचार ॥८॥

चौ०-राम धामदा पुरी सुहावनि। लोक समस्त विदित जग पावनि।
राम चरित मानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइय विश्रामा ॥
राम चरित मानस मुनि भावन। विरचेउ शंभु सुहावन पावन ॥
राम सीय यश सलिल सुधासम। उपमा वीचि विलास मनोरम ॥
राम भगति सुरसरि तहि जाई। मिली सुकीरति सरयु सुहाई ॥
राम तिलक हित मंगल साजा। परब योग जनु जुरेउ समाजा ॥
रामराज सुख विनय बड़ाई। विशद सुखद सोइ सरद सुहाई।
राम सुप्रेमहि पोषत पानी। हरत सकल कलि कलुष गलानी ॥
राम नाम कर अमित प्रभावा। सन्त पुरान उपनिषद गावा।
राम कवन प्रभु पूछों तोहीं। कहिय बुझाइ कृपानिधि मोहीं ॥
राम भगत तुम्ह मन क्रम बानी। चतुराई तुम्हारि मैं जानी।
राम कथा शशि किरन समाना। सन्त चकोर करहिं जेहि पाना ॥
राम कथा मुनिवर्य बखानी। सुनी महेश परम सुख मानी ॥

दोहा—राम बचन मृदु गूढ़ सुनि, उपजा अति संकोच।
सती सभीत महेश पहि, चलीं हृदय बड़ सोच ॥९॥

चौ०-राम नाम शिव सुमिरन लागे। जानेउ सती जगत पति जागे ॥
राम चरित अति अमित मुनीशा। कहि न सकहिं सत कोटि अहीशा।
राम सो अवध नृपति सुत सोई। की अज अगुन अलख गति कोई।

दोहा—राम कृपा ते पारवति, सपनेहु तव मन माहिं।
शोक मोह सन्देह भ्रम, मम विचार कछु नाहिं ॥१०॥
राम कथा सुर धेनु सम, सेवत सब सुख दानि।
सत समाज सुर लोक सब, को न सुनै अस जानि ॥११॥

चौ०-राम कथा सुन्दर करतारी। संशय विहंग उड़ावनि हारी।
राम कथा कलि विटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराज कुमारी।
राम नाम गुन चरित सुहाये। जनम करम अगनित श्रुति गाये॥
राम सच्चिदानन्द दिनेशा। नहिं तहँ मोह निशा लवलेशा॥
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना। परमानन्द परेश पुराना॥
राम सो परमातमा भवानी। तहँ अति भ्रम अविहित तव बानी॥
राम ब्रह्म चिनमय अविनासी। सर्व रहित सब उर पुर बासी।
राम अतर्क बुद्धि मन बानी। मति हमार अस सुनहि सयानी॥
राम जनम के हेतु अनेका। परम विचित्र एक ते एका॥
राम कीन्ह चाहें सो होई। करै अन्यथा अस नहिं कोई॥
रामचन्द्र के चरित सुहाये। कलप कोटि लगि जाहिं न गाये॥

दोहा—सो मैं तुम्ह सन कहहुँ सब, सुनु मुनीश मन लाइ।
राम कथा कलि मल हरनि, मङ्गल करनि सुहाइ ॥१२॥
राम लखन दोउ बन्धुवर, रूप शील गुन धाम।
मख राखेउ सबु साखि जगु, जीति असुर संग्राम ॥१३॥

चौ०-राम अनुज मन की गति जानी। भगत बछलता हिय हुलसानी।
राम देखावहिं अनुजहिं रचना। कहि मृदु मधुर मनोहर बचना।
राम कहा सब कौशिक पाहीं। सरल सुभाव छुवा छल नाहीं॥
रामहिं चितव भाव जेहि सीया। सो सनेहु सुख नहिं कथनीया॥
राम रूप अरु सिय छबि देखी। नर नारिन परिहरी निमेखी॥

दोहा—रामहिं प्रेम समेत लखि, सखिन्ह समीप बोलाइ।
सीता मातु सनेह बस, बचन कहै बिलखाइ ॥१४॥

चौ०-राम चहहिं शंकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥
राम बाहु बल सिन्धु अपारु। चहत पारु नहिं कोउ कनहारू ॥

दोहा-राम विलोके लोग सब, चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपाय तन, जानी विकल विसेषि ॥१५॥

चौ०-राम रूप राकेस निहारी। बढ़त बीचि पुलकावलि भारी ॥
रामहिं लखन बिलोकत कैसे। शशिहि चकोर किसोरक जैसे ॥
राम सुभाय चले गुरु पाहीं। सिय सनेह बरनत मन माहीं ॥
राम लखन दसरथ के ढोटा। दीन्ह असीस देखि भल जोटा ॥
रामहिं चितइ रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन ॥
राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने। कहि कछु लखन बहुरि मुसकाने ॥
राम कहेउ रिस तजिय मुनीशा। कर कुठारु आगे यह शीशा ॥
राम मात्र लघु नाम हमारा। परशु सहित बड़ नाम तुम्हारा ॥
राम कहा मुनि कहहु विचारी। रिसि अति बड़ि लघु चूक हमारी ॥
राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु चाप मिटै सन्देहू ॥
राम लखन उर कर बर चीठी। रहि गये कहत न खाटी मीठी ॥

दोहा-सुनहु महीपति मुकुट मनि, तुम सम धन्य न कोउ।
राम लखन जिन्ह के तनय, विश्व विभूषण दोउ ॥१६॥

चौ०-राम लखन की कीरति करनी। बारहिं बार भूप वर बरनी ॥
राम सरिस बर दुलहिनि सीता। समधी दशरथ जनक पुनीता ॥
रामहिं देखि बरात जुड़ानी। प्रीति कि रीति न जाति बखानी ॥

दोहा-राम सीय सोभा अवधि, सुकृति अवधि दोउ राज।
जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस, मिलि नर नारि समाज ॥१७॥
राम रूप नख सिख सुभग, बारहिं बार निहारि।
पुलक गात लोचन सजल, उमा समेत पुरारि ॥१८॥

चौ०-रामहिं चितव सुरेस सुजाना। गौतम शाप परम हित माना ॥

दोहा—रामचन्द्र मुख चन्द्र छवि, लोचन चारु चकोर ।
करत पान सादर सकल, प्रेम प्रमोद न थोर ॥१६॥

चौ०-राम नाम कहि बरषहिं फूला । मुनि असीस धुनि मङ्गल मूला ॥
राम सीय सुन्दर प्रति छाहीं । जगमगाति मनि खम्भन माहीं ॥
राम सीय सिर सेंदुर देहीं । सोभा कहि न जात बिधि केहीं ॥
राम बिदा मांगत कर जोरी । कीन्ह प्रनाम बहोरि बहोरी ॥
राम करौं केहि भाँति प्रशंसा । मुनि महेश मन मानस हंसा ॥
रामहिं निरखि ग्राम नर नारी । पाइ नयन फल होहिं सुखारी ॥
राम दरस हित अति अनुरागी । परिछन साजु सजन सब लागी ॥
रामहिं देखि रजायसु पाई । निज निज भवन चले सिर नाई ॥

दोहा—राम प्रतोषीं मातु सब, कहि विनीत वर बैन ।
सुमिरि शम्भु गुरु विप्र पद, किये नींद बस नैन ॥२०॥

चौ०-राम सप्रेम संग सब भाई । आयसु पाई फिरे पहुँचाई ॥

दोहा—राम रूप भूपति भगति, ब्याहु उछाहु अनन्दु ।
जात सराहत मनहिं मन, मुदित गाधि कुल चन्दु ॥२१॥

अयोध्या काण्ड

चौ०-राम रूप गुन शीलु सुभाऊ । प्रमुदित होंहि देखि सुनि राऊ ॥

दोहा—कहेउ भूप मुनिराज कर, जोइ जोइ आयसु होइ ।
राम राज अभिषेक हित, वेगि करहु सोइ सोइ ॥२२॥

चौ०-राम सीय तनु सगुन जनाये । फरकहिं मंगल अंग सुहाये ॥
रामहिं बन्धु सोच दिन राती । अंडहिं कमठ हृदय जेहि भाँती ॥

दोहा—राम राज अभिषेक सुनि, हिय हरषे नर नारि ।
लगे सुमंगल सजन सब, विधि अनुकूल विचारि ॥२३॥
सुनि सनेह साने बचन, मुनि रघुबरहिं प्रशंस ।
राम कस न तुम कहहु अस, हंस वंस अवतंस ॥२४॥

चौ०-राम करहु सब संयम आजू। जौं बिधि कुशल निबाहैं काजू॥

दोहा–विपति हमारि बिलोकि बड़, मातु करिय सोइ आजु।
राम जाहिं बन राजु तजि, होइ सकल सुर काजु॥२५॥

चौ०-रामहिं छाड़ि कुशल केहि आजू। जिन्हहि जनेशु देइ जुवराजू॥
राम तिलक जौं साचेहुँ काली। देउँ मागु मन भावत आली॥
रामहिं तिलक कालि जौ भयऊ। तुम्ह कहुँ विपति बीज विधि बयऊ॥
रामहिं देउँ कालि जुवराजू। सजहि सलोचन मंगल साजू॥
राम सपथ सत कहउँ सुभाऊ। राम मातु कछु कहेउ न काऊ॥
राम साधु तुम साधु सयाने। राम मातु भलि सब पहिचाने॥
राम राम रटि विकल भुआलू। जनु बिनु पंख विहंग बिहालू॥

दोहा–परी न राजहिं नींद निशि, हेतु जानु जगदीशु।
राम राम रटि भोरु किय, कहहि न मरमु महीशु॥२६॥

चौ०-रामु सुमंत्रहि आवत देखा। आदरु कीन्ह पिता सम लेखा॥
रामु कुभाँति सचिव सङ्ग जाहीं। देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं॥
राम सत्य सब जो कछु कहहू। तुम्ह पितु मातु बचन रत अहहू॥
रामहिं मातु बचन सब भाये। जिमि सुरसरिगत सलिल सुहाये॥
रामहिं चितइ रहेउ नर नाहू। चला विलोचन बारि प्रबाहू॥
राम सरिस सुत कानन जोगू। काह कहिंहि सुनि तुम कहँ लोगू॥
राम उठाइ मातु उर लाई। कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई॥
राम प्रबोधु कीन्ह बिधि नाना। समउ सनेह न जाइ बखाना॥
राम बिलोकि बन्धु कर जोरे। देह गेह सब सन तृनु तोरे॥
राम प्रान प्रिय जीवन जी के। स्वारथ रहित सखा सबही के॥
राम तुरत मुनि वेषु बनाई। चले जनक जननिहि सिरु नाई॥
राम चलत अति भयउ विषादू। सुनि न जाय पुर आरत नादू॥
राम चले बन प्रान न जाहीं। केहि सुख लागि रहत तनु माहीं॥
राम वियोग विकल सब ठाढ़े। जहँ तहँ मनहुं चित्र लिखि काढ़े॥

राम चरन पंकज प्रिय जिन्हहीं । विषय भोग वस करइ कि तिन्हहीं ॥

दोहा—राम लखन सिय जान चढ़ि, शंभु चरन सिरु नाइ ।
सचिव चलायउ तुरत रथ, इत उत खोज दुराइ ॥२७॥
राम दरस हित नेम व्रत, लगे करन नर नारि ।
मनहुँ कोक कोकी कमल, दीन विहीन तमारि ॥२८॥

चौ०-राम लखन सिय रूप निहारी । कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी ॥
राम चन्द्र पति सो बैदेही । सोवत महि विधि बाम न केही ॥
रामु ब्रह्म परमारथ रूपा । अविगत अलख अनादि अनूपा ॥
राम प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती । तदपि होति नहिं शीतल छाती ॥
राम लखन सिय पद सिरु नाई । फिरेउ बनिक जिमि मूरि गवाई ॥
राम प्रनाम कीन्ह सब काहू । मुदित भये लहि लोचन लाहू ॥

दोहा—राम कीन्ह विश्राम निसि, प्रात प्रयाग नहाइ ।
चले सहित सिय लखन जन, मुदित मुनिहिं सिर नाइ ॥२९॥

चौ०-राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं । नाथ कहिय हम केहि मगु जाहीं ॥
राम सप्रेम पुलकि उर लावा । परम रंक जनु पारस पावा ॥
राम लखन सिय रूप निहारी । शोचु सनेह विकल नर नारी ॥

दोहा—तब रघुबीर अनेक विधि, सखहिं सिखावनु दीन्ह ।
राम रजायसु सीस धरि, भवन गवन तेहि कीन्ह ॥३०॥

चौ०-राम लखन सिय रूप निहारी । पाइ नयन फलु होंहि सुखारी ॥
रामहिं देखि एक अनुरागे । चितवत चले जाहिं सङ्ग लागे ॥
राम लखन सिय सुन्दरताई । सब चितवहिं चित मन मति लाई ॥
राम लखन सिय कथा सुहाई । रही सकल मग कानन छाई ॥
राम लखन सिय प्रीति सुहाई । बचन अगोचर किमि कहि जाई ॥
राम धाम पथ पाइहिं सोई । जो पथ पाव कबहुं मुनि कोई ॥
राम दीख मुनि बास सुहावन । सुन्दर गिरि काननु जलु पावन ॥

सो०—राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धि पर ।
अविगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह ॥१॥

चौ०-राम देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥
राम भगत प्रिय लागहि जेही । तेहि उर बसहु सहित वैदेही ॥
राम प्रनामु कीन्ह सब काहू। मुदित देव लहि लोचन लाहू ॥
राम सनेह मगन सब जाने । कहि प्रिय बचन सकल सनमाने ॥
रामहिं केवल प्रेमु पियारा । जानि लेउ जो जाननि हारा ॥
राम सकल बनचर तब तोषे। कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे ॥
राम सङ्ग सिय रहति सुखारी । पुर परिजन गृह सुरति बिसारी ॥

दोहा—सुमिरत रामहिं तजहिं जन, तृन सम बिषय बिलासु ।
राम प्रिया जग जननि सिय, कछु न आचरज तासु ॥३१॥
रामु लखन सीता सहित, सोहत परन निकेत ।
जिमि वासव बस अमरपुर, सची जयन्त समेत ॥३२॥

चौ०-राम राम सिय लखन पुकारी । परेउ धरनि तल ब्याकुल भारी ॥
राम रहित रथ देखिहिं जोई । सकुचहि मोहि बिलोकत सोई ॥
राम जननि जब आइहि धाई । सुमिरि बच्छु जिमि धेनु लवाई ॥
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह राम लखन वैदेही ॥
राम कुशल कहु सखा सनेही। कहँ रघुनाथ लखन वैदेही ॥
राम रूप गुन सील सुभाऊ। सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ ॥
राम सखा तब नाव मंगाई। प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥

दोहा—राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुबर विरह, राउ गयऊ सुर धाम ॥३३॥
राम विरोधी हृदय ते, प्रगट कीन्ह विधि मोहि ।
मो समान को पातकी, बादि कहौं कछु तोहि ॥३४॥

चौ०-रामु लखनु सिय बनहि सिधाये। गइउँ न संग न प्रान पठाये ॥
राम प्रान तें प्रान तुम्हारे । तुम रघुपतिहिं प्रान ते प्यारे ॥

दोहा—कहहु तात केहि भाँति कोउ, करहिं बड़ाई तासु ।
राम लखन तुम्ह शत्रुहन, सरिस सुअन शुचि जासु ॥३५॥

चौ०-राम पुनीत विषय रस रूखे। लोलुप भूप भोग के भूखे ॥

दोहा—राम मातु शुठि सरल चित, मो पर प्रेमु विशेषि ।
कहत सुभाय सनेह बश, मोर दीनता देखि ॥३६॥

चौ०-राम दरश बश सब नर नारी । जनु करि करिनि चले तकि बारी ॥
राम प्रताप नाथ बल तोरे । करहिं कटकु बिनु भट बिनु घोरे ॥
रामहिं भरत मनावन जाहीं । सगुन कहइ अस विग्रह नाहीं ॥
राम सखा सुनि स्यंदन त्यागा । चले उतरि उमगत अनुरागा ॥
राम राम कहि जे जमुहाहीं । तिन्हहिं न पाप पुञ्ज समुहाहीं ॥

दोहा—स्वपच शवर खस यवन जड़, पाँवर कोल किरात ।
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात ॥३७॥

चौ०-राम नाम महिमा सुर कहहीं । सुनि सुनि अवध लोग सुख लहहीं ॥
राम सखहिं मिलि भरत सप्रेमा । पूँछी कुशल सुमंगल खेमा ॥
राम कीन्ह आपन जबही तें । भयउँ भुवन भूषन तबही तें ॥
राम घाट कहँ कीन्ह प्रनामू । भा मनु मगन मिले जनु रामू ॥
राम जनमि जगु कीन्ह उजागर । रूप शील सुख सब गुन सागर ॥
रामु सुना दुःख कान न काऊ । जीवन तरु जिमि जुगवत राऊ ॥
राम तुम्हहिं प्रिय तुम प्रिय रामहिं । यह निरदोष दोष विधि बामहिं ॥
रामु पयादेहिं पाय सिधाये । हम कहँ रथ गज बाजि बनाये ॥
राम गवन बन अनरथ मूला । जो सुनि सकल विश्व भइ शूला ॥

दोहा—तुम्ह कहँ भरत कलंक यह, हम सब कहँ उपदेशु ।
राम भगति रस सिद्धि हित, भा यह समउ गनेशु ॥३८॥

चौ०-राम भगति अब अमिय अघाहूँ । कीन्हेहु सुलभ सुधा बसु धाहूँ ॥
राम बिरह तनु तजि छन भंगू । भूप शोच कर कवन प्रसंगू ॥
राम लखन सिय बिनु पग पनहीं । करि मुनि बेष फिरहिं बन बनहीं ॥

दोहा—राम बिरह व्याकुल भरतु, सानुज सहित समाज ।
पहुनाई करि हरहु श्रम, कहा मुदित मुनिराज ॥३९॥

चौ०-राम सखा कर दीन्हें लागू । चलत देह धरि जनु अनुरागू ॥
राम बास थल विटप बिलोके । उर अनुराग रहत नहिं रोके ॥

दोहा—राम सकोची प्रेम बश, भरत सप्रेम पयोधि ।
बनी बात बिगरन चहति, करिअ जतनु छलु सोधि ॥४०॥

चौ०-राम सदा सेवक रुचि राखी । वेद पुरान साधु सुर साखी ॥

दोहा—राम भगत परहित निरत, पर दुःख दुखी दयाल ।
भगत शिरोमनि भरत तें, जनि डरपहु सुरपाल ॥४१॥
तेहि बासर बसि प्रातहीं, चले सुमिरि रघुनाथ ।
राम दरश की लालसा, भरत सरिस सब साथ ॥४२॥

चौ०-राम सखा तेहि समउ देखावा । शैल शिरोमनि सहज सुहावा ॥
राम निरादर कर फलु पाई । सोवहुँ समर सेज दोउ भाई ॥
राम लखन सिय सुनि मम नाऊँ । उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ ॥
राम बास बन सम्पति आजा । सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥

दोहा—राम सैल सोभा निरखि, भरत हृदय अति प्रेम ।
तापस तप फलु पाइ जिमि, सुखी सिरानें नेम ॥४३॥

चौ०-राम सखा रिषि बरबस भेटे । जनु महि लुटत सनेहु समेटे ॥
राम बचन सुनि सभय समाजू । जनु जल निधि महँ विकल जहाजू ॥
राम सैल बन देखन जाहीं । जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं ॥
राम कृपाल निषाद नेवाजा । परिजन प्रजा चहिय जस राजा ॥
रमा रमन पद बन्दि बहोरी । बिनवहिं अंजुलि अंचल जोरी ॥
राम दरशु लालसा उछाहू । पथ श्रम लेशु कलेशु न काहू ॥
राम सनेह सरस मन जासू । साधु सभा बड़ आदर तासू ॥
राम सपथ मैं कीन्हि न काऊ । सो करि कहउँ सखी सति भाऊ ॥
रामु जाइ बन करि सुर काजू । अचल अवधपुर करिहहिं राजू ॥
राम भरत गुन कहत सप्रीती । निशि दंपतिहिं पलक सब बीती ॥

राम बचन गुरु नृपहि सुनाये। शील सनेह सुभाय सुहाये ॥
रामहिं राय कहेउ बन जाना। कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रवाना ॥

दोहा—राम सत्य व्रत धरम रत, सब कर शीलु सनेहु।
सङ्कट सहत सकोच बश, कहिय जो आयसु देहु ॥४४॥

चौ०-राम भगति मय भरतु निहारे। सुर स्वारथी हहरि हियँ हारे ॥

दोहा—रामु सनेह सकोच बश, कह ससोच सुर राज।
रचहु प्रपंचहिं पंच मिलि, नाहित भयो अकाज ॥४५॥
राम सपथ सुनि मुनि जनकु, सकुचे सभा समेत।
सकल बिलोकत भरत मुखु, बनइ न ऊतरु देत ॥४६॥

चौ०-राम रजाइ मेट मन माहीं। देखा सुना कतहुं कोउ नाहीं ॥
रामहिं चितवत चित्र लिखे से। सकुचत बोलत बचन सिखे से ॥
राम मातु दुख सुख सम जानी। कहि गुन दोष प्रबोधी रानी ॥

दोहा—सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहुँ, राम कहत जमुहात।
राम प्रान प्रिय भरत कहुँ, यह न होइ बड़ि बात ॥४७॥

चौ०-राम कृपा अबरेब सुधारी। बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी ॥

दोहा—राम दरश लगि लोग सब, करत नेम उपवासु।
तजि तजि भूषन भोग सुख, जियत अवधि की आसु ॥४८॥

चौ०-राम मातु गुरु पद शिरु नाई। प्रभु पद पीठ रजायसु पाई ॥
रमा बिलासु राम अनुरागी। तजत वमन जिमि जन बड़भागी ॥

दोहा—राम प्रेम भाजन भरतु, बड़े न यहि करतूति।
चातक हंस सराहिअत, टेक बिबेक बिभूति ॥४९॥

राम प्रेम विधु अचल अदोषा। सहित समाज सोह नित चोषा ॥

अरण्य काण्ड

चौ०-राम बदन बिलोकि मुनि ठाढ़ा। मानहुं चित्र माझ लिखि काढ़ा॥
राम अनुज समेत वैदेही। निशि दिनु देव जपत हहु जेही॥
दोहा-राम राम कहि तनु तजहिं, पावहिं पद निर्वान।
करि उपाय रिपु मारे, छन महुँ कृपा निधान॥५०॥
चौ०-राम रोष पावक अति घोरा। होइहि सलभ सकल कुल तोरा॥
राम कहा तनु राखहु ताता। मुख मुसकाइ कही तेहिं बाता॥
राम सकल नामन ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका॥
राम जबहिं प्रेरेहु निज माया। मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया॥
दोहा-राव नारि जशु पावन, गावहिं सुनहिं जे लोग।
राम भगति दृढ़ पावहिं, बिनु बिराग जप जोग॥५१॥

किष्किन्धा काण्ड

चौ०-राम राम हा राम पुकारी। हमहिं देखि दीन्हेहु पट डारी॥
दोहा-राम चरन दृढ़ प्रीति करि, बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ ते, गिरत न जानै नाग॥५२॥
चौ०-राम बालि निज धाम पठावा। नगर लोग सब ब्याकुल धावा॥
रामु कहा अनुजहिं समुझाई। राजु देहु सुग्रीवहिं जाई॥
दोहा-प्रथमहिं देवन गिरि गुहा, राखेउ रुचिर बनाइ।
रामु कृपानिधि कछुक दिन, बास करहिंगे आइ॥५३॥
हरषि चले सुग्रीव तब, अंगदादि कपि साथ।
रामानुज आगें करि, आये जहँ रघुनाथ॥५४॥
चौ०-राम काज अरु मोर निहोरा। बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा॥
दोहा-चले सकल बन खोजत, सरिता सर गिरि खोह।
राम काज लवलीन मन, बिसरा तनु कर छोह॥५५॥
चौ०-राम काज कारन तनु त्यागी। हरिपुर गयउ परम बड़ भागी॥
राम काज लगि तब अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्वताकारा॥

सुन्दर काण्ड

दोहा—हनुमान तेहि परसा, कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हे बिनु, मोहि कहाँ बिश्राम ॥५६॥

चौ०-राम काज करि फिरि मैं आवौं। सीता कै सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥

दोहा—राम काजु सबु करिहहु, तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आशिष देइ सुरसा गई, हरषि चले हनुमान ॥५७॥
रामायुध अङ्कित गृह, शोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसी के बृन्द तहँ, देखि हर्ष कपिराइ ॥५८॥

चौ०-राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥
रामचन्द्र गुण बरनै लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥
रामदूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुणा निधान की ॥
राम बान रवि उए जानकी। तम बरूथ कहँ जातुधान की ॥
राम चरन पंकज उर धरहू। लङ्का अचल राज तुम करहू ॥
राम नाम बिनु गिरा न सोहा। देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥
राम बिमुख सम्पति प्रभुताई। जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
एक कपिन्ह जब आवत देखा। किये काजु मन हरष बिसेषा ॥
राम कृपा बल पाइ कपिन्दा। भये पच्छ जुत मनहुँ गिरिन्दा ॥

दोहा—राम बान अहिगन सरिस, निकर निसाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तब लगि, जतनु करहु तजि टेक ॥५९॥
रामु सत्य संकल्प प्रभु, सभा काल बश तोरि।
मैं रघुबीर शरन अब, जाउ देहु जनि खोरि ॥६०॥

चौ०-राम बचन सुनि बानर जूथा। सकल कहहिं जै कृपा बरूथा ॥
राम कृपां अतुलित बल तिनहीं। तृन समान त्रैलोकहिं गिनहीं ॥
राम तेज बल बुधि बिपुलाई। शेष सहस शत सकहिं न गाई ॥
रामानुज दीन्हीं यह पाती। नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती ॥

दोहा—बातन मनहिं रिझाइ सठ, जन घालसि कुल खीस।
राम बिरोध न उबरेसि, सरन बिष्णु अज ईस ॥६१॥

लंका काण्ड

चौ०-राम प्रताप सुमिरि मन माहीं। करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥
राम चरन पङ्कज उर धरहू। कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
राम बचन सबके मन भाये। मुनिवर निज निज आश्रम आये॥

दोहा-रामहिं सौंपि जानकी, नाइ कमल पद माथ।
सुत कहुँ राज समर्पि वन, जाय भजिय रघुनाथ ॥६२॥
जथा मत्त गज जूथ महुँ, पंचानन चलि जाइ।
राम प्रताप सुमिरि उर, बैठु सभा शिरु नाइ ॥६३॥

चौ०-राम विरोध कुशल जसि होई। सो सब तोहि सुनाइहि सोई ॥
राम मनुज कस रे शठ बङ्गा। धन्वी काम नदी पुनि गङ्गा ॥
राम मनुज बोलत असि बानी। गिरहि न तव रसना अभिमानी॥
राम प्रताप सुमिरि कपि कोपा। सभा माँझ प्रन करि पद रोपा ॥
रामानुज लघु रेख खचाई। सोउ नहिं नाघेउ असि मनुसाई॥
राम प्रताप प्रबल कपि जूथा। मर्दहिं निशिचर सुभट बरूथा ॥
राम कृपा करि जुगल निहारे। भये विगत श्रम परम सुखारे ॥
राम कृपा करि चितवा सबहीं। भये विगत श्रम बानर तबहीं ॥
राम समीप गयउ घननादा। नाना भाँति कहेसि दुर्वादा ॥
राम चरन सरसिज उर राखी। चला प्रभंजन सुत बल भाषी ॥

दोहा-सुनि दशकंठ रिसान अति, तेहि मन कीन्ह विचार।
राम दूत कर मरौं बरु, यह खल रत मल भार ॥६४॥

चौ०-राम राम कहि छाँड़ेसि प्राना। सुनि मन हरषि चले हनुमाना ॥
राम प्रभाव विचारि बहोरी। बंदि चरन कह कपि कर जोरी ॥

दोहा-राम रूप गुन सुमिरि मन, मगन भयऊ छन एक।
रावन माँगेउ कोटि घट, मद अरु महिप अनेक ॥६५॥

चौ०-राम सेन निज पाछें घाली। चले सकोप महा बलशाली ॥
राम कृपा कपि दल बल बाढ़ा। जिमि तृन पाइ लाग अति डाढ़ा॥

दोहा–रामानुज कहँ राम कहँ, अस कहि छाँड़ेसि प्रान।
धन्य शक्रजित मातु सब, कह अङ्गद हनुमान ॥६६॥
राम वचन सुनि विहँसेउ, मोहिं सिखावत ग्यान।
बयरु करत नहिं तब डरे, अब लागे प्रिय प्रान ॥६७॥

चौ०-राम कृपा करि सूत उठावा। तब प्रभु परम क्रोध कहुं पावा॥

दोहा–तानि शरासन श्रवन लगि, छाँड़े विशिख कराल।
राम मारगन गन चले, लहलहात जनु ब्याल ॥६८॥

चौ० राम विमुख शठ चह सम्पदा। अस कहि हनेसि माझ उर गदा॥

दोहा–राम प्रचारे वीर तब, धाये कीश प्रचण्ड।
कपि दल प्रवल विलोकि तेहि, कीन्ह प्रगट पाखण्ड ॥६९॥

चौ०-राम सुभाव सुमिरि वैदेही। उपजी विरह व्यथा अति तेही॥
राम विमुख अस हाल तुम्हारा। रहा न कुल कोउ रोवनि हारा॥
रामाकार भये तिन्ह के मन। गये परम पद तजि शरीर रन॥
राम सरिस को दीन हितकारी। कीन्हे मुकुत निसाचर झारी॥

दोहा–उमा जोग जप दान तप, नाना मख ब्रत नेम।
राम कृपा नहि करहि तसि, जसि निष्केवल प्रेम ॥७०॥

उत्तर काण्ड

दोहा–राम विरह सागर महँ, भरत मगन मन होत।
विप्र रूप धरि पवन सुत, आइ गयउ जनु पोत ॥७१॥
बैठे देखि कुशासन, जटा मुकुट कृश गात।
राम राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जल जात ॥७२॥
राम प्रान प्रिय नाथ तुम्ह, सत्य बचन मम तात।
पुनि पुनि मिलत भरत सन, हरष न हृदय समात ॥७३॥
भेटेउ तनय सुमित्रा, राम चरन रति जानि।
रामहिं मिलत कैकई, हृदय बहुत सकुचानि ॥७४॥

चौ०-राम कहा सेवकन्ह बोलाई। प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई॥

दोहा–राम बाम दिशि शोभति, रमा रूप गुन खानि ।
देखि सासु सब हरषी, जन्म सुफल निज जानि ॥७५॥

चौ०-राम विलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि शोचत हंसि मिलनी ॥
राम राज बैठे त्रैलोका । हर्षित भये गये सब शोका ॥
राम भगति रत नर अरु नारी । सकल परम गति के अधिकारी ॥

दोहा–राम राज्य विहंगेश सुनु, सचराचर जग माहिं ।
काल कर्म सुभाव गुन, कृत दुख काहुहि नाहिं ॥७६॥

चौ०-राम राज कर सुख सम्पदा । बरनि न सकइ फणीस शारदा ॥

दोहा–जासु कृपा कटाक्ष सुर, चाहत चितवन सोइ ।
राम पदारविंद रति, करति सुभावहि खोइ ॥७७॥

चौ०-राम करहिं भ्रातन पर प्रीती । नाना भाँति सिखावहिं नीती ॥

दोहा–चारु चित्रशाला गृह, गृह प्रति लिये बनाइ ।
राम चरित जे निरखत, मुनि मन लेहि चुराइ ॥७८॥
रमा नाथ जहँ राजा, सो पुर बरनि कि जाइ ।
अणिमादिक सुख संपदा, रहीं अवध सब छाइ ॥७९॥

चौ०-राम कथा मुनिवर बहु बरनी । ज्ञान जोनि पावक जिमि अरनी ॥
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी । कृपा सिन्धु बिनती कछु मोरी ॥
राम चरित शत कोटि अपारा । श्रुति शारदा न बरनै पारा ॥
राम अनन्त अनन्त गुनानी । जन्म करम अनन्त नामानी ॥
राम चरित जे सुनत अघाहीं । रस विशेष जाना तिन्ह नाहीं ॥
राम चरित मानस तुम्ह गावा । सुनि मैं नाथ अमित सुख पावा ॥

दोहा–राम परायन ज्ञान रत, गुणागार मति धीर ।
नाथ कहहु केहि कारन, पायउ काक शरीर ॥८०॥

चौ०-राम चरित विचित्र विधि नाना । प्रेम सहित कर सादर गाना ॥
राम भगति पथ परम प्रवीना । ज्ञानी गुन गृह बहु कालीना ॥
राम कथा सो कहइ निरन्तर । सादर सुनहिं विविध विहँग वर ॥
राम कृपा तब दरसन भयऊ । तव प्रसाद सब संशय गयऊ ॥

राम कृपा भाजन तुम्ह ताता। हरि गुन प्रीति मोहिं सुखदाता॥
राम कृपा आपनि जड़ताई। कहउँ खगेश सुनहु मन लाई॥

दोहा—रामचन्द्र के भजन बिनु, जो चह पद निर्वान।
ज्ञानवन्त अपि सो नर, पशु बिनु पूँछ विषान॥८१॥

चौ०-राम उदर देखेउँ जग नाना। देखत बनइ न जाइ बखाना॥
राम प्रसाद भगति वर पायउँ। प्रभु पद बन्दि निज आश्रम आयउँ॥
राम कृपा बिनु सुनु खगराई। जानि न जाइ राम प्रभुताई॥
राम भजन बिनु मिटहिं न कामा। थल विहीन तरु कबहुँ कि जामा॥

दोहा—बिनु बिस्वास भगति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न रामु।
राम कृपा बिनु सपनेहु, जीवकि लह विश्रामु॥८२॥

चौ०-राम काम शत कोटि सुभग तनु। दुर्गा अमित कोटि अरि मर्दनु॥

दोहा—राम अमित गुन सागर, थाह कि पावइ कोइ।
संतन्ह सन जस कछु सुनेउँ, तुम्हहि सुनायउँ सोइ।८३॥

चौ०-राम चरित सर सुन्दर स्वामी। पायहु कहाँ कहहु नभ गामी॥
राम बिमुख लहि विधि सम देही। कवि कोविद न प्रशंसहिं तेही॥
राम भगति एहिं तन उर जामी। ताते मोहिं परम प्रिय स्वामी॥
रामहिं भजहिं तात शिव धाता। नर पाँवर कै केतिक बाता॥
राम चरन वारिज जब देखौं। तब निज जन्म सुफल करि लेखौं॥
राम भगति जल मम मन मीना। किमि बिलगाइ मुनीश प्रवीना॥
राम चरित सर गुपुत सुहाबा। शम्भु प्रसाद तात मैं पाबा॥
राम भगति जिन्हके उर नाहीं। कबहुँ न तात कहिय तिन्ह पाहीं॥
राम भगति अविरल उर तोरे। बसहि सदा प्रसाद अब मोरे॥
राम रहस्य ललित बिधि नाना। गुपुत प्रगट इतिहास पुराना॥
राम भगति निरुपम निरुपाधी। बसै जासु उर सदा अबाधी॥
राम भगति सोइ मुकुति गोसाईं। अनइच्छित आवै बरिआईं॥

राम भगति चिन्तामनि सुन्दर । बसइ गरुड़ जाके उर अन्तर ॥
राम भगति मनि उर बस जाके । दुख लवलेश न सपनेहु ताके ॥
राम सिंधु घन सज्जन धीरा । चन्दन तरु हरि सन्त समीरा ॥
राम कृपा नाशहिं सब रोगा । जौं एहि भाँति बनै संजोगा ॥
राम चरन नूतन रति भई । माया जनित विपति सब गई ॥
राम कथा के ते अधिकारी । जिन्ह के सत संगति अति प्यारी ॥

दोहा–राम चरन रति जो चहै, अथवा पद निर्वान ।
भाव सहित जो यह कथा, करै श्रवन पुटपान ॥८४॥

चौ०-राम कथा गिरिजा मैं बरनी । कलिमल शमनि मनोमल हरनी ॥
राम उपासक जे जग माहीं । एहि सम प्रिय तिन्ह के कछु नाहीं ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं । सन्तत सुनिय राम गुन ग्रामहिं ॥

दोहा—बिनु बिस्वास भगति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।
राम कृपा बिनु सपनेहु, जीवकि लह बिश्रामु ॥